उपन्यास और किन्नर जीवन

(विशेष संदर्भ: पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ के हिन्दी विषय में मास्टर
ऑफ फिलॉसफी की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबन्ध
(सारांशिका)

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध-निर्देशक
प्रो० सर्वेश कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष
हिन्दी विभाग

शोध छात्रा
रजनी रानी
पंजीयन क्रमांक : 873/20
हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025

2022

लघु शोध–प्रबन्ध
(सारांशिका)

प्रथम अध्याय– उपन्यास का स्वरूप

उपन्यास के स्वरूप का कोई निश्चित मानक अब तक मानकीकृत नहीं हो पाया है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास के स्वरूप को अपने–अपने अनुसार व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। कोई उपन्यास को जीवन का महाकाव्य मानता है तो कोई महाकाव्य का गल्प रूपांतरण। विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं को प्रथम अध्याय में उद्धृत किया गया है। उपन्यास मानव जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। यह मानव जीवन की काल्पनिक कथा कहता है। यह कथा यथार्थ या फिर आदर्शवादी हो सकती है। यह मानव के चरित्र का उद्‌घाटन करता है। उपन्यास शिष्टाचार का सम्प्रदाय, बहस का विषय, इतिहास का चित्र और पाकेट का थियेटर है। इसमें जीवन की विडंबना का चित्रण मिलता है। उपन्यास जीवन की आलोचना करता है। उपन्यास के अंतर्गत लगभग सभी गद्य विधाएँ अंतर्भूत होती जा रही हैं। रिपोर्ताज, पत्राचार, आत्मकथा, जीवनी इत्यादि की शैली पर उपन्यास रचे जा रहे हैं। आत्मकथात्मक, जीवनीपरक, पत्र–प्रविधि पर आधारित उपन्यास का लेखन जारी है। समकालीन दौर में ऐसे उपन्यासों का लेखन जोरों से चल रहा है।

द्वितीय अध्याय– समाज एवं किन्नर जीवन

समाज में किन्नरों का अधिकांश जीवन बहिष्कार, तिरस्कार और बलात्कार पर ही व्यतीत हुआ है। कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो भारतीय इतिहास में किन्नरों को सिर्फ मुगलों के शासन काल में स्वाभिमान से जीने का मौका प्राप्त हुआ है। इसके अलावा लगभग इन्हें बहिष्कार और तिरस्कार का ही सामना करना पड़ा है। राजाओं के शासन काल में ये योद्धा और राज परिवार की रानियों की सुरक्षा में सेवा देते थे। अर्थात् योद्धा और सैनिक की पदवी मिलती थी। किन्नरों को मुख्यतः LGBTTT के रूप में जाना जाता है– L-लेस्बियन, G-गे, B-बाईसेक्सुअल,

T-ट्रांसजेंडर, T-ट्रांससेक्सुअल, T-ट्रांस वुमेन। ये समाज में किन्नरों के विभिन्न प्रकार हैं जो बहिष्कृत हैं। लेस्बियन–स्त्री का स्त्री के प्रति आकर्षण लेस्बियन कहलाता है। गे– गुरुष का पुरुष के प्रति समलैंगिक आकर्षण गे कहलाता है। स्त्री या पुरुष दोनों के प्रति मनचाहे रूप से आकर्षित होने वाले समूह को बाईसेक्सुअल कहते हैं। जिनमें शारीरिक ओर मानसिक रूप से विपरीत आकर्षण हो उसे ट्रांसजेंडर कहते हैं। जो पुरुष होकर स्त्री की तरह हाव–भाव एवं आंगिक रूप प्रदर्शित करते हैं उन्हें ट्रांससेक्सुअल कहते हैं। जो पुरुष होकर भी इच्छानुसार अपनी भावनाएँ परिवर्तित करते रहते हैं वो टांस वेसटाइट/क्रॉस डेस्सर कहलाते हैं हालांकि इनके हाव–भाव एवं इच्छाएँ स्त्री की होती हैं। स्त्री बनकर तो रहते हैं लेकिन लिंग परिवर्तन नहीं करवाते हैं। हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में किन्नरों के बहिष्कृत, तिरस्कृत और बलात्कृत जीवन का चित्रण देखने को मिलता है। हालांकि नाला सोपारा उपन्यास में इन सबके प्रतिरोध में सामाजिक और व्यक्तिगत पहचान के संघर्ष का चित्रण मिलता है। कुछ उपन्यासों में किन्नरों के वैकल्पिक जीवन की भी कल्पना की गई है।

तृतीय अध्याय– चित्रा मुद्गल का रचना संसार

चित्रा मुद्गल का रचना संसार उपन्यास, कहानी, बाल उपन्यास, बाल कहानी के रूप में मूलतः जाना जाता है। लेकिन इसके अतिरिक्त नाटक, अनुवाद, आलेख, संपादकीय पुस्तकों का काम भी चित्रा मुद्गल जी ने किया है। हालाँकि चित्रा मुद्गल जी का मौलिक लेखन कथा–साहित्य ही है। चित्रा मुद्गल जी का रचना संसार वृहद है। इनकी रचनाओं की विषय–वस्तु स्पष्ट बहुआयामी है। जीवन के विभिन्न पक्षों को छूने का प्रयास किया हैं। न सिर्फ छूने का बल्कि उसके समाधान का भी प्रयास किया हैं। स्त्री के साथ हो रहे शोषण को बहुत बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। स्त्री शोषण के अनेक पक्षों यथा– बलात्कार, अपमान, कामकाजी स्त्रियों के साथ कार्यस्थल पर कामुकतापूर्ण तरीके से छेड़छाड़, प्रेम का छलिया रूप, विवाह की समस्या इत्यादि इनके रचना का संसार है जिसको लेखिका उद्घाटित करती हैं। श्रमिक और निम्नवर्ग की भूख, गरीबी और बेरोजगारी का मर्मस्पर्शी चित्रण करती हैं। निम्नवर्ग की स्त्रियों का दोहरा शोषण– एक तो

बेरोजगारी ऊपर से घर और बाहर पुरुषों की वहशीपन की शिकार होती हैं। भ्रष्टाचार, बीवियों की अदला–बदली, स्त्रियों का स्त्रियों द्वारा शोषण का संसार इनकी रचनाओं में मिलता है। साथ ही बाल–बच्चों को भी अपने रचना संसार से शिक्षित करती हैं। उन्हें नैतिक और जीवन की मूल्यपरक शिक्षा देती हैं। मानवीय संवेदना का विकास करती हैं। साथ ही उनके मनोजगत को समझकर उनका मनोरंजन भी करती हैं। इनके रचना संसार का नया विषय किन्नरों की ससम्मान घर वापसी है। उनके मनुष्य होने का संघर्ष है।

चतुर्थ अध्याय– पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर जीवन

चतुर्थ अध्याय में किन्नर विनोद उर्फ बिन्नी को उसके माता–पिता घर और समाज के भय और लोकलाज के कारण जबरदस्ती किन्नरों के सरदार को सौंप देते हैं। लेकिन फिर भी विनोद हार नहीं मानता वह किन्नरों के डेरे में रहकर भी किन्नरों का–सा जीवन नहीं जीता। इतना ही नहीं वह एक बेकरी की दुकान में रहकर नौकरी करने के लिए भागता भी है लेकिन फिर भी सरदार के चंगुल से बच नहीं पाता है। हालाँकि फिर भी वह डेरे में रहकर ही पूनम और चन्द्रा के सहयोग से और विधायक जी की कृपा से शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा ग्रहण कर नौकरी करता है। शिक्षा और नौकरी का संघर्ष लगातार जारी रहता है। शिक्षा, नौकरी के बाद एक जिम्मेदार नागरिक की भाँति किन्नरों की सामाजिक पहचान की भी वकालत करता है। स्त्री–पुरुष के समान एक अन्य लिंग के रूप में नहीं बल्कि स्वेच्छानुसार स्त्री–पुरुष के अंतर्गत ही पहचान की माँग करता है। इसलिए पहले किन्नरों को मानव मानकर समाज द्वारा उन्हें स्वीकार किया जाए। किन्नरों के साथ हो रहे बलात्कार का भी मुखर विरोध किया जा रहा है। पूनम जोशी और चन्द्रा के साथ हुए बलात्कार किन्नरों के साथ हो रहे यौन शोषण का प्रमाण है। बहिष्कार, तिरस्कार, बलात्कार, शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य के लिए हो रहे लगातार संघर्ष घर वापसी की माँग तक जा पहुँचते हैं। किन्नर अपने स्वाभिमान के लिए घर वापसी की भी माँग करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप विनोद की माँ अपने बेटे के घर वापसी के लिए एक माफीनामा प्रकाशित कराती है। अन्य बेटों की तरह उसे भी

सभी अधिकार देते हुए घर वापस आ जाने की सार्वजनिक अपील करके वह मृत हो जाती है।

पंचम अध्याय– पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा : एक आलोचनात्मक अध्ययन

किन्नर जीवन केन्द्रित अब तक लिखे उपन्यासों में 'नाला सोपारा' उपन्यास बेजोड़ है। यह उपन्यास किन्नर की सामाजिक पहचान अर्थात् मनुष्य होने के संघर्ष का दस्तावेज है जबकि अन्य उपन्यास समस्या, रस्म–रिवाज, रहन–सहन, वेशभूषा, पेशा अर्थात् पारंपरिक जीवन को चित्रित करने का कार्य करते हैं। मधुरेश, सविता शर्मा, विजय बहादुर सिंह और बबिता सिंह जैसे समीक्षकों ने इसे किन्नरों के मनुष्य होने के संघर्ष का दस्तावेज घोषित किया है। पितृसत्तात्मक समाज और सत्ता से टकराने वाला सशक्त किन्नर पात्र विनोद उर्फ बिमली को बताते हैं। किन्नरों की समस्या का समाधान समाज, मानव और भावना के द्वारा ही संभव है। इसी कारण यह उपन्यास अन्य उपन्यासों की अपेक्षा विशिष्ट है। इसकी भाषा पर समीक्षकों ने अपने–अपने मत दिए हैं। भाषा सरल, सहज और परिवेशगत हैं। गुजराती और मराठी के शब्दों का सम्मिश्रण है। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज, शब्द भी मिलते हैं। उपन्यास की भाषा विषयानुरूप पठनीय है। शिल्प प्रयोगात्मक है। पत्र–शैली में अनेक प्रसंग दिए गए है जिससे उपन्यास का शिल्प बहुआयामी है। हालांकि अंत में दो समाचार उपन्यास के शिल्प के प्रवाह को खण्डित करते हैं। ऐसा लगता है जैसे यह अंतिम में चस्पा कर दिया गया है। लेकिन फिर भी यह उपन्यास के भाव एवं उद्देश्य को सफलतापूर्वक पाठकों तक पहुँचाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(क) आधार ग्रंथ

1. पोस्ट बॉक्स नम्बर–203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2019

(ख) सहायक ग्रंथ

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य का साथी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, महाराष्ट्र, द्वितीय संस्करण–1950
2. किशोरी लाल गोस्वामी, हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश
3. नलिन विलोचन शर्मा, आलोचना, वर्ष खण्ड–1
4. प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी
6. गोविन्द त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भारतीय साहित्य मन्दिर, नई दिल्ली, 1959
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी
9. हंस पत्रिका, जनवरी 1999
10. क्षेमचन्द्र सुमन, योगेन्द्र कुमार मल्लिक, साहित्य विवेचन, आत्माराम एण्ड संस, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, 1952
11. डॉ. कृष्ण बल्लभ जोशी, हिन्दी साहित्यशास्त्र की भूमिका
12. बाबूगुलाब राय, काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

13. "The novel is typically a representation of human experience whether liberal or ideal and there fore inevitably a comment upon life."

14. मुंशी प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस

15. एच.बी. लैपरोध, दि आर्ट ऑफ दि नोवलिस्ट, लन्दन, 1921

16. रेणुशाह, फणीश्वरनाथ रेणु का कथा शिल्प

17. प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस

18. डॉ. प्रताप नारायण टण्डन, हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास

19. पारुकान्त देसाई, हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास, शोध प्रबन्ध, हिन्दी विभाग, महाराजा सायजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 1978

20. प्रो. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवां सं.–2019

21. डॉ. कल्पना पाटील, चित्रा मुद्‌गल का कथा–साहित्य, विद्या प्रकाशन कानपुर, प्र.सं.–2012

22. प्रियंका नारायण, किन्नर : सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.–2021

23. के. वनजा, क्वीर विमर्श : लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.–2021

24. डॉ. शबाना हबीब, समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्र.सं.–2021

25. डॉ. पायल लिल्हारे और डॉ. श्याम मोहन पटेल (संपादक), हिन्दी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श, वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर, प्र.सं–2020

26. के. वनजा, चित्रा मुद्गलः एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, सं.–2016

27. अंजु दुआ जैमिनी, चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में संघर्ष और संचेतना, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, प्र.सं.–2016

28. सफलता 'सरोज' (संपादिका), किन्नर विमर्श : कल, आज और कल, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.–2019

29. डॉ. सविता शर्मा, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज, विकास प्रकाशन, प्र.सं.–2022 ई.

30. डॉ. जयश्री एस.टी. (संपादक), तीसरी दुनिया का यथार्थ : एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.–2021

31. डॉ. शगुफ्ता नियाज़ (संपादक), थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में), विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय सं.–2019 ई.